इतिवादिन एवास्य होतुराहुतिसाधनम् ।

अनिन्द्या नन्दिनी नाम धेनुरावव्रते वनात् ।।82।।

अन्वय इति वादिन एव अस्य होतुः आहुतिसाधनम् नन्दिनी नाम अनिन्द्या धेनुः वनात् आववृते।

अनुवाद इन (वशिष्ठ ऋषि) के ऐसा कहते हुए ही हवनशील (इस वशिष्ठ) के यज्ञ की आहुति का साधन, (दही, घी आदि) (कामधेनु की पुत्री) नन्दिनी नाम की प्रशंसनीय गाय वन से लौट आई।

टिप्पणियां

इति वादिनः एवं वदतः, जब ऋषि ऐसा कह रहे थे।

आहुतिसाधनम् आहुते साधनम् (षष्ठी तत्पुरुष) यज्ञ की आहुति (दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र आदि) मूल साधन। यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री नन्दिनी से ही प्राप्त होती थी। अतः वह आहुति का मूल साधन थी।

नन्दिनी महर्षि वशिष्ठ की दिव्य धेनु का नाम है। वाल्मीकि की रामायण तथा अन्य ग्रन्थों में भी कथाएं प्राप्त होती हैं जिनमें इस बात का उल्लेख है कि महर्षि वशिष्ठ तथा राजर्षि विश्वमित्र में संघर्ष का कारण यही दिव्य धेनु थी। एक बार महाराज विश्वमित्र महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में पहुंचे तो महर्षि ने उनका राजोचित सम्मान किया और तपोवन में ही राजधानी जैसी विलास सामग्री उपस्थित कर दी। इस पर विश्वामित्र को आश्चर्य हुआ और इन्होंने इसका कारण जानना चाहा। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि

महर्षि वशिष्ठ नन्दिनी नामक दिव्य धेनु की महिमा से ही तपोवन में राजकीय वैभव उपस्थित कर सके हैं, तो उन्होंने उसको तुरन्त लेना चाहा। इस पर दोनों में युद्ध हुआ और नन्दिनी ने ऐसी दिव्य शक्तिशाली सेना अपनी महिमा से उपस्थित की कि विशाल सेना वाले विश्वामित्र को बुरी तरह पराजित होना पड़ा। अतएव राजर्षि विश्वामित्र को कहना पड़ा– **धिग्बलं क्षत्रियबलं ब्रह्मतेजो बलं बलम्।**

आववृते आ धातु वृत् लिट्, अन्य पुरुष, एकवचन, लौटी, वापिस आई।